बाल भारती

1948 से लगातार प्रकाशित
मई 2026
₹15

दादू चाहिए

मानवता की सुनहरी मशाल

सच्चा सुख

जंगल का अधूरा संगीत

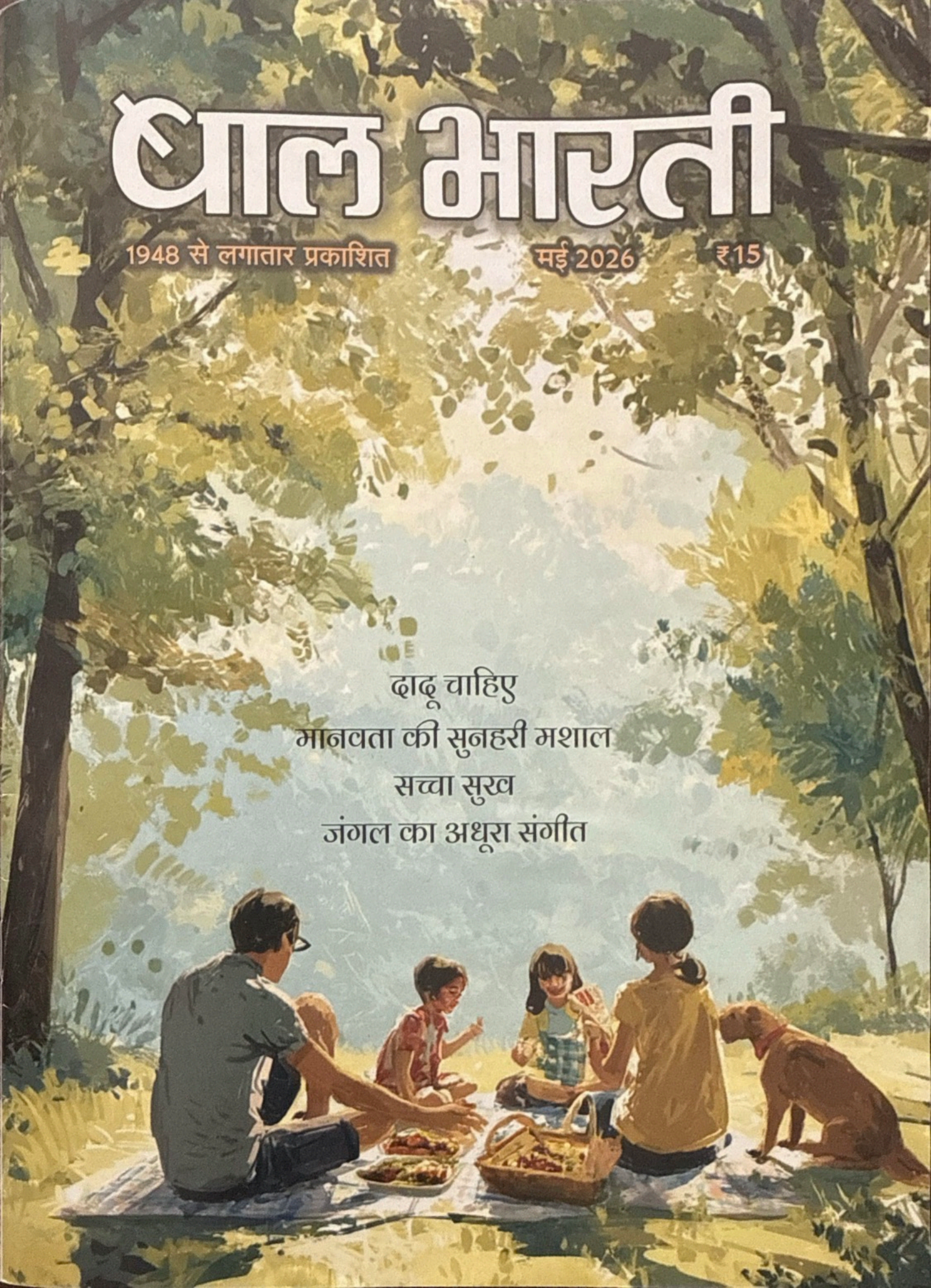

जंगल का अधूरा संगीत

नेहा त्रिपाठी
स्वतंत्र लेखिका

शहर के किनारे एक छोटा सा जंगल था। वैसे तो लोग उसकी तरफ़ कुछ ध्यान नहीं देते थे लेकिन जो लोग थोड़ी देर रुककर उसे देखते, उन्हें लगता कि वहाँ कुछ अलग है। सुबह का समय था। सूरज अभी पूरी तरह निकला नहीं था, लेकिन उसकी हल्की रोशनी पेड़ों की पत्तियों पर चमक रही थी।

एक छोटा बच्चा जंगल के किनारे खड़ा था। वह हर दिन यहाँ आता था, क्योंकि उसे इस जंगल की आवाज़ें सुनना बहुत अच्छा लगता था। चिड़ियों की चहचहाहट, पत्तों की सरसराहट, दूर बहते पानी की हल्की आवाज़... उसे लगता था जैसे जंगल उससे बातें कर रहा है।

उस दिन भी वह आया और उसने अपनी आँखें बंद कीं। वह ध्यान से सुनने लगा। आवाज़ें थीं लेकिन कुछ अलग था। जैसे कोई चीज़ कम हो। उसने फिर से ध्यान लगाया, लेकिन उसे समझ नहीं आया कि क्या गायब है। सब कुछ था, फिर भी कुछ नहीं था।

वह धीरे-धीरे आगे बढ़ा। उसकी नज़र एक फूल पर पड़ी। वह फूल तो था, लेकिन उस पर कोई नहीं था। उसे अचानक याद आया कि यहाँ रोज़ एक छोटी-सी मधुमक्खी आती थी। वह हर दिन उस फूल पर बैठती थी। लेकिन आज वह नहीं थी। बच्चे ने थोड़ी

देर सोचा, फिर कंधे उचका कर आगे बढ़ गया।

अगले दिन जब वह फिर आया, तो उसे और भी बदलाव दिखे। कुछ फूल कम हो गए थे। कुछ पत्ते सूखने लगे थे। चिड़ियों की आवाज़ें भी पहले से कम थीं। उसने एक पेड़ की ओर देखा और जैसे उससे पूछने की कोशिश की, "क्या हुआ?" पेड़ ने कुछ नहीं कहा, लेकिन उसके पत्ते पहले जितने ज़ोर से नहीं हिले।

दिन बीतते गए और जंगल की आवाज़ बदलने लगी। पहले जो आवाज़ें मिलकर एक सुंदर संगीत बनाती थीं, अब वे अलग-अलग और टूटी हुई लगने लगीं। जैसे कोई गाना हो जिसमें कुछ सुर गायब हो गए हों। बच्चे ने फिर आँखें बंद कीं, और इस बार उसे साफ़ महसूस हुआ - जंगल अधूरा हो गया है।

उस दिन जब बच्चा घर लौटा, तो उसके मन में वही सवाल घूमता रहा - जंगल की आवाज़ें क्यों बदल रही हैं? रात को जब वह सोने लगा, तो उसे लगा जैसे वह फिर से उसी जंगल में खड़ा है। लेकिन इस बार सब कुछ अलग था। यह रात का जंगल था।

यहाँ दिन जैसी चहल-पहल नहीं थी, लेकिन एक अलग तरह की आवाज़ थी - धीमी, गहरी और रहस्यमयी। झींगुरों की आवाज़, पत्तों के बीच से गुजरती हवा, दूर कहीं किसी जानवर की हल्की आहट– सब कुछ शांत होते हुए भी ज़िंदा था।

बच्चे को पहली बार महसूस हुआ कि जंगल सिर्फ दिन में नहीं, रात में भी अपनी कहानी कहता है। अगर दिन की आवाज़ें बदल रही हैं, तो शायद रात की आवाज़ों पर भी असर पड़ रहा होगा। उसे समझ आया कि प्रकृति कभी पूरी तरह चुप नहीं होती - वह बस अपना तरीका बदलती है।

उसने ज़ोर से पूछा, "आख़िर क्या हो रहा है?" कुछ देर तक सब शांत रहा। फिर उसे एक बहुत धीमी-सी आवाज़ सुनाई दी। वह आवाज़ ज़मीन के अंदर से आ रही थी। उसने नीचे देखा, तो एक छोटी-सी चींटी बाहर आई।

बच्चे ने हैरानी से पूछा, "तुमने भी सुना?" चींटी ने शांत स्वर में कहा, "हम सब सुन रहे हैं लेकिन तुमने पहली बार महसूस किया है।" बच्चा थोड़ा उलझ गया। "क्या मतलब?" उसने पूछा।

"जब एक आवाज़ जाती है, तो बाकी आवाज़ें भी बदल जाती हैं," चींटी ने कहा।

बच्चे को याद आया, "मुझे तो बस मधुमक्खी नहीं दिखी।"

चींटी हल्का-सा मुस्कुराई, "तुम्हें सिर्फ वही नहीं दिखी लेकिन उससे बहुत कुछ जुड़ा था।"

अगले दिन बच्चा जंगल में थोड़ा और अंदर चला गया। वहाँ एक छोटा-सा तालाब था। वह पहले भी उसे देख चुका था, लेकिन आज उसने उसे ध्यान से देखा। पानी पहले जैसा साफ़ नहीं था। उसमें हल्की-सी धुंधलाहट थी।

तभी उसे लगा, जैसे पानी खुद उससे बात कर रहा हो। पानी कह रहा था - "जब पेड़ कम होते हैं, तो मैं सूखने लगता हूँ। जब मिट्टी अपनी ताकत खो देती है, तो मैं गंदा हो जाता हूँ। और जब मैं बदलता हूँ, तो मुझ पर निर्भर सब बदल जाते हैं।"

बच्चे ने देखा कि तालाब के किनारे कुछ मेंढक कम थे और कुछ पक्षी वहाँ नहीं आ रहे थे। उसे समझ आया कि पानी सिर्फ पानी नहीं है, वह भी इस पूरी कहानी की एक ज़रूरी कड़ी है।

चींटी ने फिर समझाया, "मधुमक्खी फूलों को मिलाती थी। फूलों से फल बनते थे। फलों से बीज... बीज से पेड़। पेड़ों से घर और घरों से ये सारी आवाज़ें।"

तभी पास का पेड़ धीरे-धीरे बोल उठा, "मैं भी कमज़ोर हो रहा हूँ क्योंकि मेरे बीज कम हो गए हैं।"

उसी समय एक चिड़िया उड़ कर आई, लेकिन वह उतनी खुश नहीं थी। उसने कहा, "मुझे खाने को कम मिल रहा है क्योंकि फल कम हो गए हैं।"

बच्चा अब समझने लगा था। उसने धीरे से कहा, "तो मतलब सब जुड़ा है?"

"हाँ," सबने जैसे एक साथ कहा।

बच्चा कुछ देर वहीं खड़ा रहा। उसने गहरी साँस ली, लेकिन उसे लगा कि हवा पहले जैसी ताज़ा नहीं है। उसने हाथ फैलाकर हवा को महसूस किया।

तभी जैसे हवा उसके आसपास हल्के से घूमी और बोली - "तुम मुझे देख नहीं सकते, लेकिन मैं हर जगह हूँ। पेड़ मुझे साफ़ करते हैं, पत्ते मुझे ठंडा रखते हैं। और जब पेड़ कम होते हैं, तो मैं भी बदल जाती हूँ।"

बच्चे ने फिर साँस ली और उसे पहली बार एहसास हुआ कि जो चीज़ सबसे ज्यादा ज़रूरी है, वही सबसे कम दिखाई देती है। हवा भी इस कहानी का हिस्सा है - एक ऐसी कड़ी, जो दिखती नहीं, लेकिन हर पल काम करती है।

बच्चा कुछ देर चुप रहा। फिर उसने एक और सवाल पूछा, "और मैं?" कुछ पल के लिए सब शांत हो गए। फिर पेड़ ने धीरे से कहा, "तुम भी।"

बच्चे को अचानक याद आया - कुछ दिन पहले उसने देखा था कि जंगल के पास कुछ लोग पेड़

काट रहे थे। उस समय उसे लगा था कि वे बस लकड़ी ले रहे हैं। लेकिन अब उसे समझ आया कि वे सिर्फ पेड़ नहीं काट रहे थे वे इस पूरे संगीत के सुर काट रहे थे।

उसने फिर आँखें बंद कीं। इस बार जंगल लगभग चुप था। कुछ आवाज़ें थीं, लेकिन वे पहले जैसी नहीं थीं। जैसे कोई कहानी हो, जिसके कुछ पन्ने फाड़ दिए गए हों।

बच्चा ज़मीन पर बैठ गया और उसने मिट्टी को अपने हाथ में लिया। चींटी फिर से उसके पास आई। बच्चे ने कहा, "अब मुझे लग रहा है कि सब कुछ जुड़ा है, लेकिन मैं इसे देख नहीं पा रहा।"

चींटी मुस्कुराई और बोली, "क्योंकि यह दिखाई नहीं देता। यह एक अदृश्य जाल है। अगर तुम इसका एक हिस्सा हिलाओगे, तो पूरा जाल हिल जाएगा।"

बच्चे ने मिट्टी को हल्के से दबाया और उसे लगा जैसे वह सिर्फ मिट्टी नहीं पकड़ रहा, बल्कि पूरी कहानी को छू रहा है। अब उसे समझ आने लगा था कि यह जुड़ाव दिखाई नहीं देता, लेकिन हर जगह मौजूद है।

अगले दिन बच्चा फिर जंगल में आया। लेकिन इस बार उसके हाथ खाली नहीं थे। उसके हाथ में एक छोटा-सा पौधा था। जब बच्चा पौधा लगाने लगा, तो उसके मन में एक छोटा-सा सवाल आया - क्या इतना छोटा पौधा सच में कुछ बदल सकता है? उसे लगा कि यह बहुत छोटा है, शायद इसका कोई बड़ा असर नहीं होगा।

लेकिन जैसे ही उसने उसे मिट्टी में लगाया, उसे एक अजीब-सी शांति महसूस हुई। जैसे उसने किसी टूटती हुई चीज़ को जोड़ने की शुरुआत कर दी हो। कुछ दिनों बाद जब उस पौधे पर पहला पत्ता निकला, तो उसे लगा कि यह छोटा नहीं है, यह एक शुरुआत है।

कुछ दिनों बाद उस पौधे पर एक छोटा-सा फूल खिला। और फिर एक दिन उस फूल पर एक मधुमक्खी आकर बैठ गई। उस दिन बच्चे ने फिर आँखें बंद कीं। और इस बार उसे एक नई आवाज़ सुनाई दी। छोटी-सी लेकिन साफ़। जैसे कोई गाना फिर से शुरू हो रहा हो।

पेड़ ने धीरे से कहा, "आवाज़ें वापस लाई जा सकती हैं लेकिन इसके लिए हर कड़ी को बचाना होगा।" चींटी ने कहा, "छोटे से छोटा जीव भी ज़रूरी है।" चिड़िया ने कहा, "हर कोई ज़रूरी है।"

कुछ समय बाद बच्चा अपने कुछ दोस्तों को भी जंगल में लेकर आया। उसने उन्हें सब कुछ दिखाया - बदलता जंगल, कम होती आवाज़ें, और फिर धीरे-धीरे लौटती ज़िंदगी। उसने उनसे कहा कि हम सोचते हैं कि हम जंगल से अलग हैं, लेकिन हम भी उसी कहानी का हिस्सा हैं। उसके दोस्तों ने भी छोटे-छोटे पौधे लगाए।

धीरे-धीरे जंगल में सिर्फ पेड़ ही नहीं बढ़ रहे थे, बल्कि समझ भी बढ़ रही थी। अब यह सिर्फ जंगल की कहानी नहीं थी - यह इंसानों की भी नई कहानी बन रही थी। अब जंगल फिर से बोल रहा था। लेकिन इस बार बच्चा सिर्फ सुन नहीं रहा था, वह समझ रहा था।

उसने आसमान की ओर देखा और धीरे से कहा– "जंगल सिर्फ पेड़ों से नहीं बनता, जंगल उसकी आवाज़ों से बनता है और हर आवाज़ ज़रूरी है।"

और उस दिन से, जब भी वह जंगल आता, वह सिर्फ आवाज़ें नहीं सुनता था - 'वह उनकी कहानी भी समझता था। ❑